विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत व्याकरण 29 अगस्त 2020

वर्ग षष्ठ राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

6. कारक तथा उपपद विभक्ति

7. अधिकरण कारक - क्रिया के आधार को अधिकरण कारक कहते हैं। साधारण शब्दों में कह सकते हैं कि जिस स्थान में/पार कर्ता अपना कार्य करता है उसे अधिकरण कारक कहते हैं अधिकरण कारक का चिह्न 'में' या 'पर' होता है तथा इसमें शब्द में विभक्ति द्वारा लिखाया जाता है; जैसे - **'छात्रा: विधालये पठन्ति'** - विद्यार्थी विधालय में पढ़ते हैं। यहाँ पढ़ने का कार्य क्योंकि विद्यालय में किया जा रहा है इसलिए **विधालय** 'अधिकरण करका' है और इसमें सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

8. सम्बोधन - किसी को दूर से बुलाने या अपनी ओर किसी का ध्यान आकर्षित करने के लिए सम्बोधन का प्रयोग होता है। इसका चिह्न हे, अरे, भो आदि। सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता हैं; जैसे – **'भो छात्रः! किं पठसि?'** - अरे विधार्थियो! क्या पढ़ रहे हो?

(ख) उपपद - विभक्ति - जो व्यक्ति किसी विशेष पद या शब्द के योग में प्रयोग की जाती है, उपपद विभक्ति कहते हैं। जैसे - 'बच्चा पिता के साथ उधान जाता है'। यहाँ कारक विभक्ति के अनुसार 'पिता के साथ' में 'जनस्य सह' अर्थात् षष्ठी

विभक्ति का प्रयोग होता चाहिए। परन्तु सह अव्यय के योग में तृतीया के प्रयोग का नियम होने हे उपपद विभक्ति का प्रयोग होगा। अतः वाक्य बनेगा - 'बालकः जनकेन सह वनं गच्छति।'

अतः कह सकते हैं कि कुछ विशेष पदों के साथ कारक विभक्ति का प्रयोग न करके उपपद विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।